

दोस्ती में फुद्दी चुदाई-10

“दोस्तो, पिछले भाग में रुचि ने मुझे अपनी आपबीती बताई.. दुःख तो हुआ लेकिन आपको तो पता ही है लड़कियाँ इतना खुल कर बोलें और कुछ ही दिनों की दोस्ती... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: (samar-partap-singh)

Posted: Friday, February 20th, 2015

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [दोस्ती में फुद्दी चुदाई-10](#)

दोस्ती में फुद्दी चुदाई-10

दोस्तो, पिछले भाग में रुचि ने मुझे अपनी आपबीती बताई.. दुःख तो हुआ लेकिन आपको तो पता ही है लड़कियाँ इतना खुल कर बोलें और कुछ ही दिनों की दोस्ती में चुदवा भी लें.. इसका मतलब है कि कुछ तो गड़बड़ है।

वैसे यह नई चुदाई मस्त थी।

कुछ ऐसा ही मेरे दिमाग में भी चल रहा था कि कब ये बोले कि कैन यू डू मी अ फेवर प्लीज़..

और ज्यादा वक्त नहीं हुआ था कि रुचि बोल पड़ी- तुम मेरी मदद करोगे ?

मैंने पूछा- कैसे ?

रुचि बोली- अंकिता से बदला लेने में..

मेरा दिमाग ठनका कि तभी रुचि खुल कर बोली- मुझे पता है.. तुम अंकिता को चोदना चाहते हो और तुम्हें ये भी पता है कि मैं ये काम अब भी आसानी से कर सकती हूँ.. तो क्या कहते हो ?

मैंने कुछ देर सोचा.. फिर पूछा- प्लान क्या है ?

रुचि बोली- वो अब तक सोचा नहीं है लेकिन मुझे बस उसे.. उसकी खुद की नजरों में गिराना है और कुछ नहीं.. अपने रूप रंग के गुरुर पर.. जितना ऊंचा वो उड़ती रहती है.. उसे नीचे लाना है। जब खुद वो इतने गैर मर्दों से चुदवाती रहती है तो दूसरों को रंडी कहने का उसे क्या हक़..! मुझे बस उसे रंडी साबित करना है।

अब तक शाम हो चुकी थी.. तो उस दिन की बात खत्म करके हम घर खाना हो गए..
लेकिन रूचि की बातें मेरे दिमाग में धुक्धुकी बजा चुकी थीं।

उसकी बातें मेरे मन मस्तिष्क में देर रात तक चलती रहीं.. मैंने किसी से बात भी नहीं की..
ना ठीक से सोया... मेरे मन में रूचि के लिए एक सहानुभूति थी और शायद इसी वजह से
मैंने उसकी मदद करने की ठान भी ली थी।

रूचि का उद्देश्य भी गलत नहीं था और फ़ायदा तो मेरा भी था।

अगली सुबह फिर से कॉलेज जाने को मैंने बस पकड़ी तो देखा रूचि अंकिता के पास बैठी
है.. दोनों हँस-हँस कर बातें कर रही हैं।

मैं समझ गया कि शायद ये रूचि के प्लान की शुरुआत है।

मैं चुपचाप मेघा के बगल में जाकर बैठ गया।

मेरे बैठते ही मेघा ने पूछा- क्या बात है जनाब.. आज बड़े खोए-खोए से हो ?

और उसने एकदम से मेरी जीन्स के अन्दर हाथ डाल कर मेरा लण्ड पकड़ लिया।

मैं हँस पड़ा- तू कहाँ थी कल.. किससे चुदवा रही थी ?

मेघा बोली- कहाँ यार.. कल लाल रंग के दिन आ गए थे.. सुबह-सुबह पैड्स रखना ही भूल
गई थी.. रास्ते से घर वापिस जाना पड़ा।

अगले दो दिन कुछ खास नहीं थे लेकिन तीसरे दिन रूचि मुझे मिली..

रूचि- आओ मेरे चूत के सैयाँ राजा.. क्यों इतना बेकरार दिख रहे हो ? लण्ड को कोई चूत

नहीं मिली क्या...

उसने हँसते हुए मेरे लण्ड को सहला दिया.. मैंने उसे पीछे हटाया और गुस्से में बोला-
मादरचोद साली रंडी.. देख तो लिया कर.. यहाँ कितने लोग हैं कोई देख लेगा तो तुझे
पकड़ कर यहीं पर चोद देगा.. एक से एक हरामी पड़े हैं।

रूचि- अरे जानेमन.. अब ये चूत फड़कती ही इतनी है कि सबके लौड़े झेल लेगी.. तुम्हारी
रूचि.. चार लौड़ों के पानी एक साथ ना छुटाए ना तो नाम बदल देना मेरा।

तब तक मैं रूचि को कोने में लेकर आ गया था और होंठों को चूमते हुए पूछा- हरामी..
रंडी.. छिनाल कहाँ थी तू भोसड़ी की.. बड़ी चिपक रही है अंकिता से.. क्या दिमाग चल
रहा है तेरा...

रूचि- अरे उस रंडी की चूत जो फड़वानी है.. थोड़े आंसू बहाए और फिर वो मेरी दोस्त बन
गई।

मैंने पूछा- प्लान क्या है तेरा ?

रूचि बोली- प्लान छोड़.. तू बस वो कर, जो मैं कहती हूँ.. सब समझ जाएगा धीरे-धीरे..

ये कहकर रूचि हँसते हुए चली गई और मैं अपना लौड़ा मसलता रह गया।

रात में रूचि का फ़ोन आया..

रूचि- समर.. सुनो मेरी बात ध्यान से.. अगर तुम्हें अंकिता की चूत चाहिए और ऐसा अगर
वो खुद तुमसे आकर बोले तो कैसा रहेगा।

मैं एकदम से खुश होकर बोला- बहुत बढ़िया।

रूचि आगे बोली- तो ध्यान से सुनो..

दोस्तो, इसके आगे रूचि ने मुझसे जो भी बोला.. वो आपको आगे की कहानी में समझ आ जाएगा.. और मुझे भी दो बार एक ही बात लिखने की ज़हमत नहीं उठानी पड़ेगी.. तो सस्पेंस बरकरार रखते हैं।

अगले शनिवार को रूचि के कहे अनुसार मैं रेव@मोती मॉल पहुँच गया और मूवी की दो टिकट्स खरीद कर रख लीं।

फिर मैं रूचि का इंतज़ार करने लगा.. कुछ देर बाद अंकिता आती दिखाई दी।

मैंने सोचा ये यहाँ क्या कर रही है.. तभी अंकिता की नजर भी मुझ पर पड़ी और बहुत ही प्यार से उसने पूछा।

अंकिता- हाय समर.. तुम यहाँ कैसे डियर ?

मैं कुछ जवाब दे पाता उससे पहले अंकिता का फ़ोन बज उठा और अंकिता एक मिनट बोल कर बात करने लगी।

थोड़ी देर के बाद बोली- लो रूचि मैडम ने मुझे यहाँ बुलाया और खुद ना जाने कहा बिजी हैं।

मैं हँसते हुए बोला- रूचि का कोई दीवाना मिल गया होगा.. अब रूचि उसे नाराज कैसे करे।

अंकिता भी मेरे हाथ पर हाथ मारते हुए बोली- हाँ.. बिलकुल सही.. तुम भी रूचि को बहुत अच्छे से जानते हो हम्म...

रूचि का प्लान मुझे समझ आ गया था कि उसे नहीं अंकिता को मुझे मूवी ले जाना है।

मैं बात सँभालते हुए बोला- वैसे तुम यहाँ आई क्यों थीं ?

अंकिता बोली- अरे यार सोचा था जॉन की मूवी है.. देखेंगे.. टाइम स्पेंड करेंगे.. लेकिन ये लड़की. उफ़्र क्या करूँ मैं इसका.. अब तो टिकट्स भी नहीं मिलनी.. हुँह...

इसके आगे अंकिता कुछ बोल पाती.. मैं बोला- क्यों ना मेरे साथ मूवी देख चल कर मेरे पास टिकट्स हैं और मेरा दोस्त भी नहीं आ रहा.. मैं तो वापिस ही करने जा रहा था कि तुम दिख गई।

अंकिता बोली- इतनी हॉट मूवी.. तुम दोस्त के साथ देखने वाले थे समर.. तुम 'गे' तो नहीं हो ना..

और वो खिलखिला कर हँस दी।

मैं भी हँसते हुए बोला- चलो तुम हॉल में.. साबित कर दूँगा और उसका हाथ पकड़ कर खींचते हुए हम अन्दर को भागे.. क्योंकि मूवी शुरू होने ही वाली थी।

हॉल में पहुँच कर हम अपनी कार्नर सीट्स पर बैठे.. अब तक मैंने उसका हाथ नहीं छोड़ा था.. ना ही उसने विरोध किया था।

कुछ ही देर में मूवी में चुम्मा-चाटी शुरू हो गई.. इधर मैंने देखा अंकिता कनखियों से मुझे देख रही है।

मैंने भी एक नजर उसे देखा और उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए...

हमारी आँखें बन्द हो गई और अगले ही पल हम दोनों एक-दूसरे के रसीले होंठों को चूस रहे थे।

लगभग दस मिनट के बाद जब हमने एक-दूसरे को छोड़ा तो अंकिता शर्म से लाल थी।

पूरी मूवी में ऐसा दो बार और हुआ।

फिर मूवी के बाद बाहर आकर हमने लंच किया और शाम को अंकिता का मंगेतर आया और उसी वक़्त रूचि का फ़ोन भी।

रूचि- और मेरे हीरो क्या-क्या किया ? आज दबाया कुछ कि नहीं ?

मैंने बोला- कहाँ कुछ किया यार.. बस चुम्मा-चाटी हो कर रह गई।

रूचि बोली- अबे कमीने पहली मुलाकात में ही चुम्मा-चाटी पर उतर आया तू.. सच में बहुत हारामी है.. तूने उसको चूम भी लिया और ऊपर से कहता है कि ये कुछ नहीं है तेरे लिए।

मैं हँसते हुए बोला- लेकिन जानेमन लण्ड तो प्यासा है ना.. आज्ञा अपने यार के पास..

रूचि हँसते हुए बोली- कुत्ता.. आज्ञा मेरे राजा.. उठा ले जा मुझे.. मेरी चूत भी तेरे लण्ड की प्यासी है।

करीब सात बजे मैं रूचि के ऊपर लेटा उसकी चूत में धक्के मार रहा था.. रूचि की सिसकियाँ मुझे और पागल कर रही थीं।

‘आअह्ह्ह समर.. आह्ह्ह.. चोद दो मुझे.. आह्ह्ह.. और तेज.. और तेज.. आह्ह्ह समर और जोर से...’

मैं भी तेजी से धक्के मारने लगा.. हर धक्के पर रूचि की सिसकी निकल जाती और मेरे अंडकोष रूचि की चूत से टकराते थे।

तभी रूचि को कुछ सूझा और मेरा लण्ड बाहर निकाल कर वो उल्टी हो गई और अपनी टाँगें खोल दीं।

मुझे लगा कि गाण्ड मरवाना चाहती है तो मैंने गाण्ड में लण्ड दबाया ही था कि उसका मुझे जोर का तमाचा पड़ा।

‘मादरचोद गांडू.. चूत क्या तुझे कम पड़ रही है साले.. जब देखो गाण्ड मारने की तैयारी.. चूत मार हरामी...’ रूचि गरजी।

मैं गुस्से में भी हँस पड़ा.. क्योंकि मुझे पता था अभी मैं इसका बदला लूँगा तो ये और रोएगी।

मैंने कंडोम उतार फेंका और एक ही झटके में पूरा लण्ड रूचि की चूत में उतार दिया।

रूचि को जब तक ये अहसास हुआ कि एक गुस्से से भरा लण्ड उसकी चूत में उतर चुका है.. मैं दूसरा झटका मार चुका था और रूचि चीख पड़ी।

‘अईह्ह्ह्ह... आह्ह्ह्ह.. हरामजादे कुत्ते.. भड़वे.. आअह्ह्ह्ह्ह.. मादर.. आअह्ह्ह्ह...’

इसके पहले रूचि कुछ बोल पाती.. मैंने रूचि के बाल पकड़ कर उसे खींचा और उसके मुँह पर हाथ रख दिया।

रूचि अब आगे से उठी हुई थी और पीछे से उसकी गाण्ड उठी हुई थी।

रूचि की आँखों से आंसू आ गए थे लेकिन उसे भी इस चुदाई में मजा आने लगा था।

मैंने रूचि का मुँह छोड़ दिया था और उसके चूतड़ों पर जोर से तमाचे मारने लगा।

हर तमाचे पर रूचि की 'आहहूह' निकल जाती ।

कुछ ही देर में मैं रूचि के कंधे पकड़ के उसे चोद रहा था ।

मेरा लण्ड अब झड़ने को बिल्कुल तैयार था ।

इस तरह नए तरीके से चुदने में रूचि को भी मजा आ रहा था ।

मेरा लण्ड रूचि की गरम चूत की गहराइयों तक चोट कर रहा था ।

रूचि पागल सी हो रही थी कि मैंने अपना गरम लावा रूचि की चूत में छोड़ दिया.. रूचि की चूत भी गरम फुहार पड़ते ही झड़ गई ।

मैं उलटे ही रूचि पर लेट कर उसके होंठों को चूसने लगा ।

कुछ देर बाद मैंने पूछा- आगे क्या करना है जानेमन ?

रूचि हँसते हुए बोली- बस मुझे ऐसे ही नए-नए तरीकों से चोदता रह.. बाकी तुझे खुद ही पता चल जाएगा ।

इसके बाद रूचि कपड़े पहन कर चली गई ।

मजा आया ना दोस्तो, आगे अंकिता के साथ क्या होने वाला है.. रूचि की योजना क्या है.. इसके लिए पढ़िए अगला भाग ।

अगर आपके कोई भी सुझाव हों.. तो मेल कीजिएगा...

[दोस्ती में फुद्दी चुदाई-11](#)

